P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-1) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मानविकी में शोध एवं नवाचार सम्बन्धी समस्याएं

जय प्रकाश यादव
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
एम.एम.पी.जी. कॉलेज,
मोदीनगर, गाजियाबाद,
उ0 प्र0

सारांश

मानविकी के क्षेत्र में इस समय शोध विभिन्न देश एवं विदेश के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में बड़े स्तर पर चल रहा है। यह शोध निराशाजनक नहीं बल्कि बहुत आशा जनक है। यह कोई जरूरी नहीं है कि सभी शोधकर्ता एक बेहतर परिणाम ही दे सकें। लेकिन जो कुछ भी वे खोज रहे हैं वह हमारे समाज एवं देश के लिए अति महत्वपूर्ण है। शोध के क्रम में जो कमियाँ रह जा रही हैं, इसके ढेर सारे कारण हैं। प्रथम कारण यह है कि अभी भी मानविकी में शोध सम्बन्धी पद्धति एवं प्रक्रिया पर पुस्तकों का अभाव बना हुआ है। अन्य कारणों में शोधकर्ता की आर्थिक स्थिति भी है जिसमें वह बिना किसी आर्थिक सहायता के शोध कार्य करने में दिक्कतों का सामना करता है। छोटी सी नौकरी लग जाने पर वह बीच में ही शोध कार्य छोड़ देता है। हालांकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तरह–तरह की फैलोशिप देकर शोध कार्य को बढ़ावा देने का सराहनीय कार्य कर रहा है। यह सच है कि वर्तमान में शोध कार्य में आकर्षण जिस तरह का होना चाहिए, उस तरह का आकर्षण नहीं दिखाई दे रहा है। इसका कारण यह भी है कि शोध कार्य में अधिक समय लगता है। जबकि आज का युवा शीघ्र जॉब में आकर आत्मनिर्भर बनना चाहता है। आज शोध पूर्ण करने के उपरान्त भी यह कोई गारन्टी नहीं है कि शोधार्थी को जॉब मिल ही जाय। इसलिए आज का युवा शोध खासकर मानविकी में शोध के प्रति आकर्षित नहीं हो पा रहा है।

मुख्य शब्द : अनुसंधान, शोध, सिद्धान्त, आत्मनिर्भर, अन्वेषण, यथार्थ, पाश्चात्य, आदर्शवाद, यथार्थवाद, साहित्य, निष्कर्ष, निर्णय, राष्ट्रीय प्रशिक्षित, शब्दावली, नवाचार, भाषा, सर्वेक्षण, मौलिक।

प्रस्तावना

शोध में नवाचार का अनुसंधान एक जटिल प्रक्रिया है। इसे एक खोज या अन्वेषण की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। उद्देश्य की प्राप्ति के लिए खोज या छानबीन करना आवश्यक है। शोध में नवाचार के लिए नवीन तथ्यों की खोज करनी पड़ती है। यहाँ सिद्धान्तों का नवीन दृष्टि से आख्यान की जरूरी है। नवाचार शब्द मौलिकता का प्रतीक है। तथ्यों के अन्वेषण में मौलिकता जरूरी है। शोध में नवाचार के लिए सत्य का अन्वेषण होना चाहिए। मानविकी में शोध भाषा एवं साहित्य दोनों क्षेत्रों में हो रहा है। हिन्दी के शोध में विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग हो रहा है जिनमें आलोचनात्मक पद्धति, सर्वेक्षण, तुलनात्मक पद्धति, क्षेत्रीय, अध्ययन, वर्गीय पद्धति, समस्यामूलक पद्धति, अनुगम एवं निगमन पद्धति आदि प्रमुख हैं। साहित्यिक शोध में लेखक के मूल परिवेश से परिचित होना आवश्यक है। साहित्यिक शोध रागात्मक होता है। साहित्य में कुछ बिन्दु साहित्येतर भी हो सकते हैं। विभिन्न रचनाओं में व्यक्त प्रतीकों विम्बों, छन्दो, अलंकारों, रसों का ज्ञान, भाषा से परिचय शब्द चित्रों का सौन्दर्य एवं प्रकृति के चित्रण से साहित्यिक शोध के विषय निकलते हैं। इसी प्रकार भाषा वैज्ञानिक शोध, साहित्य में समाज शास्त्रीय, काव्यशास्त्रीय, तुलनात्मक तथा लोक साहित्य से सम्बन्धित शोध नवाचार के लिए अपनाए जा सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य मानविकी में शोध एवं नवोन्मेष से जुड़ी समस्याओं पर प्रकाश डालना है। मानविकी में शोध की प्रक्रिया विज्ञान की शोध प्रक्रिया से भिन्न है। इस भिन्नता को रेखांकित करना भी इस शोध अध्ययन का उद्देश्य है। इस अध्ययन का उद्देश्य शोध से जुड़े विभिन्न सोपानों की ओर शोधार्थियों का ध्यान आकृष्ट करना भी है जिसमें शोध विषय का चयन, रूपरेखा, सामग्री, संकलन, उद्धरण, संदर्भ लेखन आदि पर प्रकाश डाला गया है। शोध के अन्तिम आयाम उपसंहार, परिशिष्ट, संदर्भ ग्रन्थ सूची सन्दर्भोलेख आदि बिन्दु अध्ययन के उद्देश्य में समाहित हैं जिससे रिसर्च मैथोडलॉजी निर्धारित होती है।

इस अध्ययन के उद्देश्य में क्षेत्रीय शोध, लोकतात्विक शोध, भाषा एवं इतिहास तथा तुलनात्मक शोध से जुड़ी समस्या एवं उसका महत्व शामिल है।

साहित्यावलोकन

मानविकी में शोध एवं नवाचार सम्बन्धी समस्याओं पर विचार के क्रम में विजयपाल सिंह की 'हिन्दी अनुसंधान', डा0 उमाकान्त गुप्ता तथा ब्रजरतन जोशी की संपादित रचना 'अनुसंधान स्वरूप और आयाम', रामेश्वर लाल खण्डेवाल की सं0 'साहित्यिक अनुसंधान के' एस. एन. गणेशन के अनुसंधान प्रविधि', डा0 सुरेश माहेश्वरी की 'अनुप्रयुक्त अनुसंधान प्रविधि' आदि साहित्य का अवलोकन किया गया है। इस विषय पर इसके अतिरिक्त अन्य अध्ययन मेरी जानकारी में नहीं है।

विश्लेषण

शोध द्वारा एक नये ज्ञान का अनुसंधान संभव होता है। मनुष्य की प्रवृत्ति हमेंशा से ही अन्वेषी रही है। यहां तक कि बच्चा भी कुछ न कुछ नया जानना चाहता है। जिज्ञासा से भरा रहता है। शोध द्वारा हम अज्ञात को ज्ञात करने का उपक्रम करते हैं। इसके लिए कभी इतिहास में जाते हैं तो कभी वर्तमान में। समाज विज्ञान एवं मानविकी के शोध के उपक्रम में हम इतिहास में जाकर परम्परा का मूल्यांकन करते हैं तथा परम्परा की निरंतरता की खोज करते हैं। परम्परा में जो कुछ प्रगतिशील है उसको समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं। परम्परा एवं इतिहास के मूल्यांकन में प्रगति विरोधी तत्वों का निषेध भी करते हैं। एक विशुद्ध इतिहासकार अपने अन्वेषण के क्रम में प्राचीन सभ्यताओं से परिचित होने के लिए उत्खनन का कार्य करता है तथा कार्बन डेटिंग की विधि से सभ्यता का काल निर्धारित करता है।

अनुसंधान में विषय चयन का विशेष महत्व है। यह विषय चयन अनुसंधानकर्ता की रूचि, अनुभव एवं उसकी विषय विशेषज्ञयता पर निर्भर करता है। कोई भी शोध एक विशेष सिद्धान्त से परिचालित होता है। शोध हमें बहुत मौलिक ढंग से विश्लेषण करना होता है। इस विश्लेषण में शोध की नयी से नयी सैद्धान्तिकी का प्रयोग किया जाता है। जीवन का सिद्धान्त से गहरा रिश्ता है और सिद्धान्त का महत्व इस बात में है कि वह मानविकी से जुड़े संकट के वक्त में एक निदान के रूप में प्रस्तुत हो। अनुसंधान में शोध की दो प्रमुख पद्धतियाँ प्रयुक्त की जाती हैं प्रथम मात्रात्मक दूसरी गुणात्मक। इन्हीं शोध पद्धतियों के माध्यम से हम किसी न किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। इन दोनों शोध पद्धतियों का गहरा सम्बन्ध सामाजिक जीवन के यथार्थ से है। ''विद्वानों का कहना है कि सामाजिक जीवन या अस्तित्व के सम्बन्ध में चेतना से परे किसी भी वस्तु का अस्तित्व नहीं है। सब मिथ्या है। यथार्थ व्यक्तिगत अनुभव या चेतना के द्वारा जो ज्ञात होता है वही वास्तविक है। वे कहते हैं कि वस्तुनिष्ठ यथार्थ का कोई अस्तित्व ही नहीं है। यथार्थ बहुवचनीय है। वे कहते है कि यथार्थ निरन्तर गतिमान प्रवाहशील बनता बिगड़ता रहता है।''[1]

अनुसंधान में तीन दृष्टियां प्रमुखता से कार्य करती हैं प्रत्यक्षवादी, व्याख्यात्मक तथा आलोचनात्मक या समीक्षात्मक। कांट ने माना है कि मनुष्य के चिन्तन को धर्मशास्त्रीय, तात्विक एवं प्रत्यक्षवादी तीन अवस्थाएं प्रमुखता से प्रभावित करती हैं। धर्मशास्त्रीय अवस्था तर्क नहीं विश्वास पर आधारित है। किसी भी घटना के पीछे ईश्वरीय कारण या पारलौकिक दृष्टि कार्य करती है। तात्विक कारणों में पारलौकिकता के पीछे तक तो दिए गये किन्तु इसकी प्रमाणिकता पर विचार नहीं किया गया है। इसी स्थिति में समाज दर्शन का उद्भव हुआ। प्रत्यक्षवादी अवस्था में वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया गया है। इस चिन्तन के द्वारा आधुनिक एवं वैज्ञानिक सोच का विकास हुआ है। इसमें सामाजिक घटनाओं के पीछे छिपे सत्य की खोज की गई है। प्राकृतिक घटनाओं एवं सामाजिक घटनाओं मे मूलभूत अन्तर है जिससे नवीन दृष्टियाँ विकसित हुई हैं। प्रत्यक्षवाद किसी भी तथ्य को वस्तुनिष्ठ ढंग से देखने की दृष्टि देता है। आलोचनात्मक शोध दृष्टि को अनुसंधान की विवेचनात्मक दृष्टि के रूप में भी जानते हैं। इस अनुसंधान की प्रकिया में परिवेश से अंतःक्रिया से अपनी समझ एवं अनुभव को समीक्षात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

अनुसंधान में कल्पना या पुर्वानुमान का बहुत महत्व है। ''ज्ञान के विकास के लिए जो दृष्टि है, वही शोध दर्शन है। यह मतों का आधारभूत संग्रह है, जो शोधार्थी का मार्गदर्शन करता है।''[2] शोध में तार्किक विवेचन का बहुत महत्व है। शोध की प्रामाणिकता भी इसी से सिद्ध होती हैं। तर्को के माध्यम से आगमनात्मक एवं निगमनात्मक दो प्रमुख शोध पद्धतियाँ देखने में आयी हैं। यह भी सच है कि कोई भी शोध पूर्वाग्रहों, मूल्यों, तथ्यों एवं विभिन्न प्रक्रियाओं से बच नहीं सकता। शोध को पाश्चात्य एवं भारतीय दर्शन अलग–अलग तरह से प्रभावित करता है। पाश्चात्य दर्शन यथार्थवाद, आदर्शवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिक विमर्श से प्रभावित है। वहीं भारतीय दर्शन ज्ञान मिमांसा, तत्व मिमांसा तथा मूल्य मिमांसा से प्रभावित है।

अनुसंधान के विषय के निर्धारण में शोधार्थी के स्वेच्छा का होना जरूरी है। कोई भी विषय जो रूचिकर न हो उसे शोधार्थी पर थोपा नहीं जाना चाहिए। शोध से संबंधित जुटाए गये आंकड़े, सूचनाएं एवं तथ्यों में ईमानदारी होनी चाहिए। इस ईमानदारी न होने के कारण शोध का स्तर गिर जाता है। शोध की गुणवत्ता को परखने के लिए विषय विशेषज्ञों की समिति को शोध के निष्कर्षो की उपादेयता पर गहराई से विचार करना चाहिए। यहां यह भी जरूरी है कि शोधकर्ता को उचित साधन, सम्मान एवं आर्थिक समृद्धि मिले तभी वह शोध के क्षेत्र में कुछ नया दे सकता है। अभी तक यही देखने को मिलता है कि अपने देश ये शोध वैज्ञानिकों एवं अन्य शोधार्थियों को यूरोप या अमेरिका जैसा माहौल नही मिलता। अपने देश में शोधार्थी एवं अनुसंधान से जुडे लोगों को दोयम दर्जे के कार्य में संल्पित माना जाता है। यहां नौकरशाही को अधिक महत्व दिया जाता है। इसीलिए प्रतिभाएं अनुसंधान के क्षेत्र में न जाकर प्रशासन में जाना अधिक पसंद करती हैं।

अनुसंधान का क्षेत्र समकालीन आधुनिक एवं उपयोगितावादी होना चाहिए। वैसे परम्पराओं की जानकारी के लिए इतिहास में भी जाना आवश्यक हो

जाता है। इसलिए भी की परम्परा की निरन्तरता वर्तमान एवं भविष्य में हस्तक्षेप, करती है। वर्तमान समय में खासकर मानविकी एवं समाज विज्ञान के क्षेत्र में दलित, आदिवासियों, पिछडों का जीवन एवं आधी आबादी स्त्री की अस्मिता से जुड़े प्रश्न काफी प्रासंगिक रहे हैं। इस क्षेत्र में शोध का दायरा बहुत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। आज के समय में जहाँ सूचनाओं का महा प्रस्फुटन है ऐसी स्थिति में ज्ञान के नये क्षितिज की तलास करना बड़ा चुनौतीपूर्ण है। ऐसी स्थिति में क्षेत्रीयता के प्रति आग्रह बढ़ा है। एक तरफ नवराष्ट्रवाद है जो सत्ता की पीठ पर चढकर आया है जिसमें समाज की समावेशी संरचना के लिए खतरा है। यह एक ऐसा उत्तर आधुनिक समय है जहां आधुनिकता के केन्द्र में ज्ञान है तो उत्तर आधुनिकता के केन्द्र में इच्छा। यहाँ केन्द्र में पूंजी है और गरीब परिधि पर। यहाँ अन्तर्वस्तु से रूप महत्वपूर्ण है। ''अन्तर्राष्ट्रीय पूंजीवाद प्रसार के फलस्वरूप राष्ट्र की अवधारणा भी बदली है। आधुनिकता ने राष्ट्रीयता को महत्व दिया जबकि राष्ट्र की सीमाएं टूट रही हैं। सब कुछ ग्लोबल है यानी उत्तर आधुनिक परिस्थितियों में इतिहास की जगह वर्तमान व राष्ट्र की जगह विश्व ले रहा है।''[3]

अनुसंधान में अन्वेषण, परिष्करण व प्रमाणीकरण जरूरी है। बहुतसा शोध मात्र उपाधि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। किन्तु बहुतसा शोध उपाधि निरपेक्ष भी होता है। शोध कार्य में नये तथ्यों की खोज एवं तथ्यों व सिद्धान्तों का नवीन दृष्टि से आख्यान आवश्यक है। शोध कार्य में आलोचनात्मक परीक्षण के साथ–साथ ठोस निर्णय भी जरूरी है। शोध कार्य में नवीनता का मौलिकता से गहरा सम्बन्ध है। तथ्यों के अन्वेषण में मौलिकता अति आवश्यक है। शोध के द्वारा ही सत्य का अन्वेषण होता है। यहाँ तथ्य एक साधन का कार्य करता है। शोध के विवेचन में सत्य और तथ्य का प्रयोग नवीन वैज्ञानिक दृष्टि से किया जाता है। विज्ञान जगत भौतिक है। भौतिक जगत में तथ्य और सत्य दोनों ही वस्तुपरक है। काव्य एवं दर्शन में आत्मपरकता का महत्व है। विज्ञान का सत्य तथ्यपरक होता है। अनुसंधान विज्ञान है या कला यह भी प्रश्न उठा करता है। यहाँ यह भी समझने की जरूरत है कि विज्ञान एवं कला एक दूसरे के पूरक ही हैं। शोधकार्य में ज्ञान का व्यवस्थित अन्वेषण एवं चिन्तन तो होता ही है। तभी वह अन्वेषण शोध प्रबंध का व्यवस्थित आकार लेता है। अनुसंधान में विज्ञान व कला दोनों का सामंजस्य स्थापित होता है। साहित्यिक शोध में कला की व्यापकता अधिक हो जाती है। इतिहास, दर्शन, राजनीतिक, शोध में कुछ कम कलात्मकता होती है। अन्य विज्ञान से जुड़े विषयों में यह कलात्मकता बहुत ही कम हो जाती है। यहाँ वैज्ञानिकता का भाव बढ़ जाता है। अनुसंधान कार्य में वैज्ञानिकता के कारण ही विधिवत् शोध प्रविधि का पालन हो पाता है और शोध के क्रम में विषय के चुनाव से लेकर शोध पूर्ण होने तक एक क्रमबद्धता बनी रहती है।

हिन्दी में अनुसंधान क्षेत्र मूलतः दो हैं प्रथम साहित्य का द्वितीय भाषा का। पर्याप्त साधनों की कमी, प्रशिक्षित शोध निर्देशक व शोधकर्ताओं का अभाव अभी बराबर बना हुआ है। शोध कार्य में विभिन्न शोध पद्धतियों का प्रयोग संभावित होता है। सर्वेक्षण, पद्धति, आलोचनात्मक पद्धति, समस्यामूलक पद्धति, तुलनात्मक पद्धति, वर्गीय अध्ययन, क्षेत्रीय अध्ययन, अनुगमन व निगमन पद्धति आदि महत्वपूर्ण पद्धतियां हैं। जिससे अनुसंधान अपने निष्कर्ष को प्राप्त करता है। सर्वेक्षण पद्धति में प्रयुक्त सूचनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण करते हैं। यहाँ अध्ययन की गहनता अपेक्षित होती है। आलोचनात्मक पद्धति में काव्यशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, भाषा वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रमुखता से किया जाता है। यहाँ शोध में साहित्य की किसी मौलिक समस्या पर विचार किया जाता है। अनुसंधान में क्षेत्रीय अध्ययन अति महत्वपूर्ण है। क्षेत्रीय अध्ययन में किसी क्षेत्र विशेष की साहित्यिक प्रवृतियों का अध्ययन महत्वपूर्ण होता है। साहित्य में आंचलिकता व लोकल कलर को शोध के केन्द्र में रखना होता है जहाँ परिवेश ही कथानक का कार्य करता है। आजकल क्षेत्रीय अस्मिताओं को लेकर ढ़ेर सारे आन्दोलन खड़े हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में लोक भाषा, लोक संस्कृति व लोक जीवन के सन्दर्भ में किसी भी अनुसंधान में अधिक महत्व रखते है। ''लोकतात्विक अध्ययन के पीछे विकासवाद, मनोविज्ञान मानव विज्ञान, नृविज्ञान, जाति विज्ञान, पुराण विज्ञान जैसे अनुशासनों से आगत संधारणाओं का ताना–बाना है।''[4]

शोध की अनुगम पद्धति में साहित्य के अंगों का विश्लेषण करने के पश्चात् उपलब्ध तथ्यों का शास्त्र के तत्वों और नियमों के अनुसार अध्ययन होता है। निगमन पद्धति में शास्त्र के अंगों को आगे रखकर उसके आलोक में विवेचन किया जाता है।

अनुसंधान में क्रिया विधि का बहुत महत्व है। ''साहित्य के क्षेत्र में भी प्रायः वैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय क्रियाविधि को ही आवश्यक संशोधन के साथ उपयोग में लाने की चर्चा रहती है। क्रियाविधि के प्रमुख अंग है–साम्रगी संकलन, परीक्षण, प्रमाणीकरण, विश्लेषण, संश्लेषण, निष्कर्ष और निर्णय।''[5] तुलनात्मक शोध की विधा अन्य शोध की विधाओं से भिन्न है। तुलनात्मक शोध के लिए सामग्री दो भिन्न स्रोतों से जुटाई जाती है। शोध का सन्दर्भ भी अलग–अलग होता है। यहाँ शोधार्थी को भाषाई भिन्नताओं से भी दो चार होना पडता है। ''तुलना किन्हीं दो साहित्यों या भाषाओं की हो सकती है। अधिक बल उस भाषा या साहित्य पर रहता है जिसकी स्थिति राजनीतिक, सांस्कृतिक या धार्मिक कारणों से महत्वपूर्ण हो जाती है। इस भाषा और साहित्य की स्थिति केन्द्रीय हो जाती है।''[6]

निष्कर्ष

अनुसंधान एवं नवोन्मेष के क्षेत्र में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। सरकारें भी इस दिशा में इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। शोध एवं नवाचार से आम लोगों को भी जोड़ा जा रहा है। सरकार ने प्राथमिकता के नौ मिशन भी तय कर किये हैं। इनमें राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े क्वांटम फ्रंटियर, आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस और इलैक्ट्रीक व्हीकल, राष्ट्रीय जैव विविधता मिशन, कचरे से कमाई, समुद्र की गहराई में जाकर दोहन, मानव स्वास्थ्य के लिए जैव विज्ञान, आसान वैज्ञानिक शब्दावली तैयार करना और उद्योग–बाजार की आवश्यकता अनुसार नये

प्रोजैक्ट बनाना है। इसके लिए विभिन्न मंत्रालयों को भी जिम्मेदारी दी गई है। लोगों को विज्ञान से जोड़ने और इस ओर आकर्षण बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री की विज्ञान, तकनीक और नवाचार सलाहकार परिषद ने यह खास पहल की है। परिषद के अध्यक्ष और देश के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार प्रो0 के0 विजय राघवन ने भी विज्ञान से लोगों के जुड़ाव को बढ़ाने के लिए नयी पहल की है। अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान रूसा के द्वारा विभिन्न राज्यों को आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। राष्ट्र की प्रगति की भी इस बात में है कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, शिक्षा, साहित्य के क्षेत्र में अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा मिले। हमें अनुसंधान में नवोन्मेष के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मानकों का ध्यान रखना भी जरूरी है। हमें पूरा विश्वास है कि भारत शीर्ष स्तर की उद्यमशीलता, डिजिटल प्रौद्योगिकी एवम् विशाल बाज़ार के साथ आने वाले दशक में डिजाइन, नवाचार और डेटा भंडार का देश बन जाएगा। वास्तविक मूल्य शोध एवं नवाचार में निहित है। इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि शीर्ष श्रेणी की उद्यमिता के साथ संयुक्त रचनात्मक और खुले दिमाग वाले भारतीय आने वाले दिनों में विश्व का नेतृत्व नहीं कर सकते। भारत का नीति आयोग भी मानता है कि विभिन्न क्षेत्रों में डिजाइन, डिजिटलीकरण, स्टार्टअप आन्दोलन, अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में जटिलताओं के बावजूद राष्ट्र निर्माण की नयी कहानी लिखी जायेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ0 उमाकान्त गुप्त, डा0 ब्रजरतन जोशी– अनुसंधान स्वरूप और आयाम, पृ0 242, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016*
2. *डॉ0 उमाकान्त गुप्त, डा0 ब्रजरतन जोशी– अनुसंधान स्वरूप और आयाम, पृ0 244, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016*
3. *डॉ0 उमाकान्त गुप्त, डा0 ब्रजरतन जोशी– अनुसंधान स्वरूप और आयाम, पृ0 251, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016*
4. *विजयपाल सिंह–हिन्दी अनुसंधान, पृ0 175, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011*
5. *डॉ0 उमाकान्त गुप्त, डा0 ब्रजरतन जोशी– अनुसंधान स्वरूप और आयाम, पृ0 41, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016*
6. *विजयपाल सिंह–हिन्दी अनुसंधान, पृ0 159, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011*